प्रातः क्लास 27/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों अर्थात् आत्माओं को रूहानी बाप अर्थात् परमपिता परमात्मा बैठ पढ़ाते हैं, समझाते हैं; क्योंकि बच्चे ही पावन बन स्वर्ग के मालिक बनने वाले हैं फिर से। सारे विश्व का बाप तो एक ही है। यह बच्चों को निश्चय होता है। सारे विश्व का, सभी आत्माओं का बाप तुम बच्चों को पढ़ा रहे हैं, इतना दिमाग़ में बैठता है; क्योंकि दिमाग है तो तमोप्रधान लोहे का बर्तन। आयरनएजेड। दिमाग आत्मा में होता है। तो इतना दिमाग में बैठता है। इतना ताकत है समझने की कि बरोबर बेहद का बाप हमको पढ़ा रहे हैं। बेहद विश्व को, बेहद सृष्टि को पलटते हैं। इस समय बेहद सृष्टि को दोजख कहा जाता है। यह मानते हो या समझते हो गरीब दोजख में हैं और बाकी सन्यासी साहुकार, बड़े2 मर्तबे वाले बहिस्त में हैं। बाप समझाते हैं जो भी हैं सभी दोजख में हैं। इसमें भी बड़े2 विद्वान पंडित, जो बहुत बड़े आदमी हैं बहुत धनवान हैं वह तो और ही बड़े दोजख में हैं। यह सभी समझने की बातें हैं। आत्मा कितनी छोटी है। इतनी छोटी सी आत्मा में सारी नालेज ठहरती है या भुला देते हैं। विश्व के सभी आत्माओं को बाप तुम्हारे सामने बैठे तुमको पढ़ाते हैं दिमाग में बैठता है। घंटा आधा घंटा या सारा दिन? यह दिमाग में रखने की भी ताकत चाहिए। ईश्वर परमपिता परमात्मा तुम(को) पढ़ाते हैं। सारा दिन यह बुद्धि में याद रहता है। बरोबर बाबा हमारे साथ यहाँ हैं। बाहर में जब अपने ...रों में रहते हो वहाँ तो साथ नहीं है ना। यहाँ प्रैक्टिकल में तुम्हारे साथ है। जैसे कोई का पति बाहर है पत्नी ...हाँ है तो ऐसे थोड़े ही कहेंगे हमारे साथ है। बेहद का बाप तो एक ही है। बाप सभी में तो नहीं होगा ना। तो यह दिमाग में आता है कि बेहद का बाप हमको नई दुनिया का मालिक बनाने लायक बना रहे हैं। दिल में इतना अपने लायक समझते हो। हम सारे विश्व के मालिक बनने वाले हैं। इसमें तो बहुत खुशी की बात है। इससे जास्ती खुशी का खज़ाना तो कोई को मिलता नहीं है। अभी तुमको मालूम पड़ा है हम यह बनने वाले हैं। अभी देवताएँ कहाँ के मालिक हैं। तुम समझते हो हम भारत में ही देवताएँ होकर गये हैं। यह तो सारे विश्व के मालिक थे। जिनके राज्य को हेविन, स्वर्ग कहा जाता है। तुम्हारे दिमाग में यह ठहरता है कि हम यह विश्व के मालिक बनने वाले हैं। इतना दिमाग में है। वह चलन है। वह बात–चीत करने का ढंग है। कोई बात में झट गुस्सा कर दिया, किसको नुकसान पहुँचाया। किसकी ग्लानि कर दी ऐसे चलन तो नहीं चलते। सतयुग में यह कब ग्लानि थोड़े ही करते हैं। वहाँ ग्लानि की छी छी ख्यालात वाले होंगे ही नहीं। बाप तो बच्चों (को) कितना जोर से उठाते हैं। तुम बाप को याद करो तो पाप कट जावेंगे। तुम हाथ उठाते हो; परन्तु ऐसी ...न है। बाप बैठ पढ़ाते हैं, यह दिमाग से ज़ोर से आता है। बाबा जानते हैं बहुतों को सोडा वाटर हो जाता। सभी को इतना खुशी का पारा नहीं चढ़ता। जब बुद्धि में बैठे तब नशा चढ़े। बाप विश्व का मालिक बनाने (लि)ये ही पढ़ाते हैं ना। यहाँ तो सभी हैं पतित रावण सम्प्रदाय। कथा है ना। राम ने बन्दरों की सेना ली। फिर यह था। .....अभी तुम समझते हो बाप रावण(माया) पर जीत पहनाकर यह बनाते हैं। मनुष्यों के दिमाग में जैसे कुछ है नहीं। एकदम गोबर भरा पड़ा है। कुछ भी समझते नहीं। यहाँ तुम बच्चों से कोई पूछते हैं तुम फट से (कहें)गे हमको भगवान पढ़ाते हैं। भगवानुवाच जैसे टीचर कहेंगे हम तुमको बैरीस्टर अथवा फलाना बनाते हैं। निश्चय पढ़ाते हैं और वह बन जाते हैं। पढ़ने वाले नम्बरवार होते हैं ना। फिर नम्बरवार पद पाते हैं। यह भी है पढ़ाई। एमआबजेक्ट सामने दिखा रहे हैं। तुम समझते हो इस पढ़ाई से हम यह बनेंगे। खुशी की बात है ना। –0सी0एस0 पढ़ने वाले समझेंगे ना हम यह पढ़कर फिर यह करेंगे, घर बनावेंगे। ऐसा करेंगे। बुद्धि में चलता है यहाँ फिर तुम बच्चों को बाप बैठ पढ़ाते हैं। सभी को पढ़ना है, पवित्र बनना है। बाप से प्रतिज्ञा करनी है कोई भी अपवित्र काम न करेंगे। बाप कहते हैं इधर कोई उल्टा काम कर लिया तो की कमाई चट हो (जावे)गी। यह मृत्युलोक पुरानी दुनिया है। हम पढ़ते हैं नई दुनिया के लिए। यह पुरानी दुनिया तो खत्म हो जानी (माया)मय का वातावरण भी ऐसे ही है। बाप हमको पढ़ाते हैं अमरलोक लिए। सारी दुनिया का चक्र बाप बैठ समझाते

हैं हाथ में कोई भी किताब आदि नहीं। ओरली ही बाप बैठ पढ़ाते हैं। पहली–2 बात समझाते हैं अपन को आत्मा निश्चय करो। हम आत्मा, भगवान बाप के बच्चे हैं। परमपिता परमात्मा परमधाम में रहते हैं। हम आत्माएँ भी वहाँ ही रहती हैं। हम आत्माएँ भी रहती वहाँ ही है फिर वहाँ से नम्बरवार यहाँ आ जाते हैं पार्ट बजाने लिए। यह बड़ी बेहद की स्टेज हैं। इस स्टेज पर पहले–2 एक्टर्स पार्ट बजाने भारत में, नई दुनिया में आते हैं। यह उन्हों की एक्टविटी है तो उन्हों की महिमा भी गाई जाती है। क्या उन्हों को तुम मिलटीलीयन कहेंगे। इन लोगों के पास तो अनगिनत अथाह धन रहता है। बाप तो ऐसे ही कहेंगे ना यह लोग.....क्योंकि बाप तो हेड है ना। यह भी ड्रामा बना हुआ है। तो जिस शिवबाबा ने इन्हों को ऐसा साहुकार बनाया तो भक्तिमार्ग में उनका (शिव का) मंदिर बनाते हैं पूजा के लिए। पहले2 उनकी पूजा करते हैं जिसने पूज्य बनाया। बाप रोज़2 समझाते हैं नशा चढ़ाने लिए; परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जो समझते हैं वह सर्विस में लगे रहते हैं तो ताजे रहते हैं ना। नहीं तो पार बुद्धि हो जाते हैं। बच्चे जानते हैं बरोबर यह भारत में राज्य करते थे। तो और कोई धर्म नहीं था। डीटिज्म ही था। फिर बाद में और2 धर्म आये हैं। अभी तुम समझते हो यह सृष्टि का चक्र फिरता है। स्कूल में एमआबजेक्ट तो पहले चाहिए ना। सतयुग आदि में यह राज्य करते थे फिर 84 के चक्र में आये हैं। बच्चे जानते हैं यह है बेहद की पढ़ाई। जन्म–जन्मान्तर तो हद की पढ़ाई पढ़ते आये हो। इसमें बड़ा निश्चय चाहिए। सारी सृष्टि को पलटाने वाला, रजोवेन्ट करने वाला अर्थात् नर्क को स्वर्ग बनाने वाला बाप हमको पढ़ा रहे हैं। इतना जरूर है मुक्तिधाम तो सभी जा सकते हैं। स्वर्ग में तो सभी नहीं आवेंगे। यह अभी तुम जानते हो हमको बाप इस विषय सागर से वैश्यालय से निकालते हैं। अभी बरोबर वैश्यालय है ना। कब से शुरू हुआ है यह भी तुम जान चुके हो। 2500 वर्ष हुआ जब कि यह रावण राज्य शुरू हुआ। भक्ति शुरू हुई है। उस समय देवी देवता धर्म वाले जो हैं वह वाममार्ग में गये। भक्ति के लिए ही मंदिर आदि बनाते हैं। सोमनाथ का मंदिर कितना बड़ा बनाया। हिस्ट्री तो सुनी है। मंदिर में क्या! तो उस समय कितने धनवान होंगे। सिर्फ एक मंदिर तो नहीं बना होगा ना। हिस्ट्री में करके एक का नाम डाला है। मंदिर तो बहुत ही राजाएँ बनाते हैं ना। सिर्फ एक मंदिर तो हो नहीं सकता। एक/दो को देख पूजा तो सभी करेंगे ना। ढेर मंदिर आदि होंगे। सिर्फ एक को नहीं लूटा होगा। दूसरे भी मंदिर उसके पास होंगे। वहाँ गांव कोई दूर–2 नहीं होते हैं। एक/दो के नजदीक ही होते हैं; क्योंकि वहाँ ट्रेन आदि तो नहीं होगी ना। बहुत नजदीक एक/दो के रहते होंगे। फिर आस्ते2 सृष्टि फैलती जाती है। अभी तुम बच्चे (प)ढ़ रहे हो। बड़े ... बड़ा बाप तुमको पढ़ाते हैं। यह तो नशा होना चाहिए ना। घर में भी कब रोना पीटना न है। (य)हाँ ही तुमको दैवीगुण धारण करनी है। इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर तुम बच्चों को पढ़ाया जाता है। (य)ह है बीच का समय जब कि तुम चेंज होते हो। पुरानी दुनिया से नई दुनिया में जाना है। अभी तुम पुरुषो0 संगमयुग पर पढ़ रहे हो। भगवान तुमको पढ़ाते हैं। सारी दुनिया को पलटाते हैं। पुरानी को नया बना देते (हैं)। जिस नई दुनिया का तुमको फिर मालिक बनना है। बाप बांधा हुआ है तुमको युक्ति बताने लिए। तो फिर (तु)म बच्चों को भी उस पर अमल करना है। यह तो समझते हो जो कुछ रिपीट हुआ वह भी एक्युरेट ड्रामा। भल मुख से कहते भी हैं कि यह नाटक है; परन्तु समझते नहीं हैं। तुम यह थोड़े ही जानते थे कि हमारी राज(धानी) थी। अभी बाप ने बताया है रावण राज्य के तुम बहुत दुखी हो। इनको कहा ही जाता है विकारी दुनिया। देवी–देवताएँ हैं सम्पूर्ण निर्विकारी। अपन को विकारी कहते हैं। अभी यह रावण राज्य कब से शुरू हुआ था कोई को ज़रा भी पता है? नहीं। बुद्धि बिल्कुल ही तमोप्रधान बन गई है। बेहद के बाप की बैठ ग्लानि करते कि वह सर्वव्यापी है। समझते नहीं हैं। नाम ही है पत्थर बुद्धि। पारस बुद्धि सतयुग में थे। तो विश्व के मालिक (थे)। अथाह सुखी थे। इन्हों का नाम ही सुखधाम। यहाँ तो अथाह दुख है। सुख दुनिया और दुख की दुनिया कैसी यह भी बाप बैठ समझाते हैं। सुख कितना समय दुख कितना समय चलता है। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते।

तुम्हारे में भी नम्बरवार समझते रहते हैं। समझाने वाला तो है बेहद का बाप। कृष्ण को बेहद का बाप थोड़े ही कहेंगे। दिल से लगता ही नहीं; परन्तु किसको बाप कहेंगे। तो शास्त्रों में इनको लगा दिया है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। कृष्ण तो ऐसे कह न सके। अभी तुम समझते हो मनुष्य कुछ भी नहीं जानते। बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि हैं। सभी मुफ्त का खाते हैं। भक्तिमार्ग में है ही सभी झूठ। ग्लानी ही बताते रहते हैं। यह भी एक खेल बना हुआ है। बाप खुद कहते हैं तुम मुझे गाली देते थे ना। भगवन के लिए क्या2 कहते हो। कच्छ अवतार, मच्छअवतार। कितनी डर्टी, भ्रष्ट बुद्धि हो गये हैं। जिसको पुकारते हैं हे पतित–पावन आओ। फिर उनके लिए कहते हैं पत्थर भित्तर में है। बेहद का बाप जो तुमको मुक्ति–जीवनमुक्ति का वरसा देते हैं। फिर भक्तिमार्ग में जब रावण राज्य में आते हैं तो तुम्हारी बुद्धि कितनी भ्रष्ट हो जाती है। बाप कहते हैं यदा यदा हि.....भारत में जब ग्लानी होती है। किसकी? भगवान बैठ समझाते हैं मेरी ग्लानी करते हैं। फिर देवताओं की भी ग्लानी कर दी है। मैं जो तुमको देवता बनाता हूँ मेरी कितनी ग्लानी करते हो। इतने पत्थर बुद्धि मूढ़मति मनुष्य बन पड़े हैं। कहते हैं ना भज गोविन्द मूढ़मति। बाप कहते हैं हे मूढ़मति गोविन्द राम2 भजो। अकल में कुछ भी आता नहीं कि किसको भजे। पत्थर बुद्धि मूढ़मति ही कहेंगे। बाप कहते हैं अभी मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ। बाप सर्व का सद्गति दाता है ना। बाप बैठ समझाते हैं तुम अपने परिवार आदि में कितने फंसे हुए हो। भगवान जो कहते हैं वह तो अमल में लाना चाहिए ना; परन्तु आसुरी मत पर हिरे हुए हैं। तो ईश्वरीय मत पर चलें कैसे। गोविन्द कौन है, क्या चीज़ है वह भी जानते नहीं। बाप बैठ समझाते हैं। तुम कहेंगे बाबा आप ने अनेक बार हमें समझाया है। यह भी ड्रामा में नूँध है। बाबा हम फिर से आप से यह वरसा ले रहे हैं। हम नर से ना0 जरूर बनेंगे। स्टुडेन्ट को पढ़ाई का नशा रहता है ना। हम यह बनेंगे। निश्चय रहता है। अभी बाप कहते हैं तुमको सर्वगुण सम्पन्न बनना है। कोई से क्रोध आदि न करना चाहिए। देवताओं में 5 विकार होते ही नहीं। श्रीमत पर चलना चाहिए। श्रीमत पहले2 कहती है अपन को आत्मा समझो। तुम आत्मा परमधाम से यहाँ पार्ट बजाने आये हो। यह तुम्हारा शरीर विनाशी है। आत्मा तो अविनाशी है ना। तो तुम अपन को आत्मा समझो। मैं आत्मा परमधाम से रहने वाला हूँ। यहाँ आये हैं पार्ट बजाने। अभी यहाँ दुखी हुए तब कहते हैं मुक्तिधाम जावें; परन्तु तुमको पावन कौन बनावे। बुलाते भी हैं एक को। तो वह एक बाप आकर कहते हैं हे मेरे मीठे2 बच्चों अपन को आत्मा समझो। (दे)ह न समझो। मैं आत्माओं को बैठ समझाता हूँ। आत्मा ही बुलाती है हे पतित–पावन आकर हमको पावन बनाओ। भारत में ही पावन थे। अभी फिर बुलाते हैं पावन बनाकर सुखधाम में ले चलो। कृष्ण के साथ तुम्हारी प्रीत तो (है)। कृष्ण के लिए सबसे जास्ती वर्तनेम आदि कुमारियाँ, माताएँ आदि रखती हैं। निर्जल रहती हैं। कृष्णपुरी अर्थात् सतयुग में जावें; परन्तु ज्ञान न होने कारण बड़े हठ आदि करते हैं। निर्जल रहते हैं। इतना यह सभी तुम करते (ह)ो कोई को रास्ता बताने लिए। खुद कृष्णपुरी आदि में जाने लिए यह रास्ता आदि बताते हैं। हठयोग आदि करते हो। तुमको कोई रोकता नहीं है। किसको तुम तंग नहीं करते हो। वह लोग गर्वमेन्ट के आगे फास्ट आदि रखते हैं, हठ करते हैं तंग करने लिए। तुमको कोई पास धरना नहीं मारकर बैठना है। न कोई ने तुमको सिखलाया ...। आपे ही तुम चलते हो आपस में मिलकर। श्रीकृष्ण तो है सतयुग का फर्स्ट प्रिन्स; परन्तु यह किसको भी पता नहीं है। कृष्ण को वह द्वापर में ले गये हैं। इतने बड़े2 विद्वान आदि जिनके इतने चेले चाटे बनते हैं। कुछ भी नहीं समझते। गायन है ना गुरु जिसके अंधले चेले सत्यानास। गुरु भी सत्यानास तो चेले की भी सत्यानास हुई पड़ी है। बाप बैठ समझाते हैं मीठे2 बच्चों ज्ञान और भक्ति दो अलग2 चीज़ें हैं। ज्ञान है दिन। भक्ति है रात। किसका? ब्रह्मा का दिन है ज्ञान, ब्रह्मा की रात भक्ति; परन्तु इनका अर्थ न गुरु ही समझते न चेले ही समझते तो हुआ गुरु जिसके अंधेले.... ज्ञान, भक्ति, वैराग्य का राज़ बाप ने तुम बच्चों को समझाया है। ज्ञान दिन भक्ति (रा)त इनके बाद फिर है वैराग्य। किसका वैराग्य? वह जानते ही नहीं। सिर्फ ऐसे ही अक्षर कह देते हैं। ज्ञान भक्ति वैराग्य। अक्षर है एक्युरेट; परन्तु अर्थ नहीं समझते। अभी तुम बच्चे समझ गये हो ज्ञान बाप देते हैं तो उससे दिन

हो जाता है। फिर भक्ति शुरू होती है तो रात कहा जाता है; क्योंकि धक्का खाना पड़ता है। आधा कल्प है दिन, आधा कल्प है रात। भक्तिमार्ग में रात थी तुम ब्राह्मणों की। ब्रह्मा की रात सो ब्राह्मणों की रात। फिर होता है दिन। ज्ञान से दिन होता है। फिर भक्ति से रात हो जाती है। रात में तुम बनवास में बैठे हो। फिर दिन में कितना धनवान बन जाते हो। तुम जानते हो यहाँ हम बनवास में बैठे हैं। यहाँ क्या सुख लेना है। यह तो अल्पकाल का सुख है। अभी देखो सुख, फिर अभी2 दुख। झगड़ा ही झगड़ा लगा पड़ा है। इसको आरफन वर्ल्ड कहा जाता है। एक भी मनुष्य बाप को नहीं जानते। ठिक्कर भित्तर में कह देते हैं। तो बाप जो बैठ समझाते हैं उसको अच्छी रीत धारण करना चाहिए। बाबा बार2 समझाते हैं यहाँ तुम बच्चे बैठे हो अपन को आत्मा समझ बैठो। हम आत्माओं को भगवान पढ़ाते हैं। है भी बरोबर भगवानुवाच। अभी भगवन किसको कहा जाये। इतने बड़े2 सन्यासी विद्वान आदि भी नहीं जानते। भगवान तो पुनर्जन्म में आते ही नहीं। वह तो बाप है। बाप के बदली बच्चा जो 84 जन्म लेते हैं उनके लिए कह देते हैं भगवान है। इनको कहा ही जाता है गांवरे का छोरा। उनका फिर कृष्ण नाम थोड़े ही होगा। नाम तो हर जन्म में बदलता रहता है। नाम–रूप देश–काल फीचर्स सभी बदल जाते हैं। कृष्ण को गांवरे का छोरा कैसे कहेंगे। इतना भी किसकी बुद्धि में नहीं आता है। बात तो बरोबर ठीक है। भिन्न2 नामरूप लेते2 गांवरे का छोरा आकर बनते हैं। फिर बाप कहते हैं जिसको तुम छोरा कहते हो बहुत जन्मों के अन्त में उनमें ही मैं आकर प्रवेश करता हूँ। जब इनकी वानप्रस्थ अवस्था होती है तब मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। 84 जन्मों के बाद आकर छोरा बनते हैं। खुद बताते हैं छोटेपन में हम पूरा छोरा था। अर्थात् निधणका, गरीब बिल्कुल। तो यह समझाना चाहिए यह अनादि बना बनाया खेल है। इसमें सभी एक्टर्स हैं। झाड़ को तो अभी तुम जान गये हो। जो2 पुनर्जन्म लेते रहते हैं ड्रामा अनुसार फिर वही रिपीट करेंगे। बना बनाया यह ड्रामा है। सभी को पार्ट मिला हुआ है। रोने आदि की दरकार ही नहीं। अनादि हरेक को अपना पार्ट मिला हुआ है। यह अनादि अविनाशी ड्रामा है ना। इनकी अन्त अथवा आदि है नहीं। बाकी हाँ पुराना सो नया, नया सो पुराना बनता है। यह भी तुम बच्चों को समझाया जाता है। पुरानी को नया, कलियुग को सतयुग कौन बनाता है। बाप को ही यह पार्ट मिला हुआ है। ड्रामा के प्लैन अनुसार बाप ही आकर नर्क को स्वर्ग बनाते हैं। बाप कहते हैं ऐसे नहीं कि मैं जो चाहूँ सो करूँ। तुमको कहते हैं ना तुम्हारा दादा ईश्वर है तो यह करके दिखावे ना। अरे यह तो ईश्वर हो कैसे सकता। यह कहाँ कहते हैं मैं ईश्वर हूँ। ईश्वर तो निराकार गुप्त है। यह थोड़े ही अपन को ईश्वर कहलाते हैं। यह तो कहते हैं मैं गांवरे का छोरा था। ब्रह्मा की रात है ना। ब्रह्मा का फिर दिन तो हम देवता बन जाते हैं। तुम सभी यहाँ मनुष्य से देवता बनने आये हो। मानुष से देवता किये करत ना लागे वार। नानक भी इनकी महिमा करते हैं ना। खुद भी कलियुग में आया हुआ है। इस समय सभी तमोप्रधान हैं। तब तो कहते हैं असंख्य चोर हराम खोर। नानक नीच कहे बिचार..... वह कहते हैं विचार तो करो वारियाँ नजावां एक बार..... तुम कितना बारी बाप पर वारी जाते हो। भक्तिमार्ग में कहते हो बाबा आप आवेंगे तो हम आप पर ही वारी जावेंगे। यह बनाया है; परन्तु अर्थ नहीं समझते। सदा सलामत तो है ना। उनको अविनाशी कहा जाता है। वह लोग तो बिगर अर्थ ही कहते रहते हैं। मेढ़क मिसल ट्रां2 करते रहते हैं। भगवान को पहले नम्बर की गाली देने वालों के आगे पांव पड़ते रहते हैं। कुछ भी समझ नहीं है। तो बाप फिर भी बच्चों को समझाते हैं एक तो बाप को अच्छी रीत याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायें। तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम बच्चों के लिए तो जरूर नई सृष्टि चाहिए ना। गायन भी है पुरानी सृष्टि पर पांव नहीं धरते। उन्हों को नई दुनिया चाहिए। तो जरूर पुरानी का विनाश होगा ना। अभी बाकी थोड़ा टाइम है। कैसे विनाश होता है वह भी समझ की बात है। हर 5000 वर्ष बाद यह चक्र फिरता रहता है। लाखों वर्ष की भेंट में 5000 वर्ष क्या है। 1% भी सच नहीं कहते। तो बाप कहते हैं मूल बात तो बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायें। बाकी पुण्य जमा होता रहता है जिससे तुम पुण्यात्मा बन जावेंगे। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।